बेटी बचाओ-सशक्त बनाओ

पति – बेटा हुआ तो हमारी किस्मत का सितारा चमकता रहेगा।
पत्नी - अगर बेटी हुई तो
पति - नहीं बाबा नहीं मुझे बेटी नहीं चाहिए।
पत्नी- क्यों?
पति - अरे मैं खर्चे उठाऊगां, घर की किस्त चुकाउंगा या उसके दहेज के लिए पैसा बचाऊगां?
पत्नी - अरे जमाना बदल गया है आने वाले टाईम में दहेज-वहेज का चक्कर ही नहीं रहेगा।
पति - ये सब कहने की बाते हैं। आजकल का माहौल देखा कितना खराब हो गया है अरे ऐसे माहौल में बेटी को सम्भालना आसान है क्या? तुम आफिस जाती हो मैं भी आफिस जाता हूँ। पीछे उसे सम्भालेगा कौन? अरे कुछ हो गया तो जमाने को कैसे मुंह दिखायेंगे ?
पत्नी- मेरे मम्मी पापा भी तो जॉब करते थे। उन्होंने भी मुझे सम्भाला
पति- पहले जमाना ओर था ज्वाईन्ट फैमिली थी। अरे आज एकाकी परिवार में लड़की सम्भालना आसान है क्या? नहीं बाबा मुझे टेंशन-वेंशन नहीं चाहिए।
पत्नी- रोहित आप पढ़े-लिखे होकर ऐसी बातें करते हो?
पति- पढ़ा लिखा हूँ तभी तो ऐसी बात करता हूँ सारी उम्र संघर्ष करके तब यहां तक पहुँचा हूँ अगर बेटी का बोझ ले लिया तो बची- खुची जिंदगी संघर्ष में ही गुजारनी पढ़ेगी।
पत्नी- आप बेटी को बोझ क्यों समझते रहे हो? आज कल लड़के- लड़की में फर्क ही क्या है?
पति- फर्क है। लड़का, लड़का होता है लड़की, लड़की होती है लड़का वंश बढ़ाता है और लड़की टेंशन बढ़ाती है।
नौकर- साहब डॉक्टर साहब ने ये रिपोर्ट दी है।
सास – अरे रोहित बेटा रोहित क्या हुआ बेटा क्या रिपोर्ट आई है क्या हुआ बेटा।
पति- जिसका डर था बेटी है
सास- सत्यानाश हो इसका सुन बेटा रोहित मुझे तो पोता ही चाहिए तू ज्योति को कह कर इस नाश पिटी का कुछ कर ज्योति ओ ज्योति (कह कर चली जाती है)
पत्नी- अच्छा रिपोर्ट आ गई बोलो ना क्या है रिपोर्ट में।
पति- तुम्हारे पेट में लड़की है लड़की
पत्नी- पर इस में परेशान होने की क्या बात है? मैं तो लड़की ही चाहती थी।
पति- पर मैं नहीं चाहता था बेटी, मुझे नहीं चाहिए बेटी समझती क्यों नहीं आजकल बेटी को पालना पढ़ाना और शादी करना सब बहुत मुश्किल है।
पत्नी- रोती है, रोहित सब मैं सम्भालूंगी। डबल मेहनत करुंगी, पर इस बार ऐसा मत कहो, प्लीज ऐसा मत कहो- रोहित ऐसा मत करो।
पति- एक बार बोला ना बेटी नहीं चाहिए मतलब नहीं चाहिए।

पत्नी- प्लीज रोहित प्लीज (रोती है)

पति – जस्ट सैट अप- चूज वन बेटी रखो या बेटी रखो या मुझे।

पत्नी- परन्तु रोहित मेरे लिए आप दोनों ही बराबर प्योर हो मुझे दोनों ही चाहिए, किसी को भी नहीं खो सकती मैं , हे प्रभु क्या हो गया आपको (रोती है)

(गीत बजता है)

बेटी तो भोलेनाथ की रहमत... .....उसपे इतना सितम तुम ना करना

हर बेटी है बड़ी प्यारी .....उसपे कुर्बान है दुनिया सारी

उसका हर रूप है बेहद सुन्दर ..... उसके हर रुप पे जग है वारी

वो वरदान बन कर है आती ..... उससे झोली को तुम भर लो

जिसने जीवन जगत को दिया है ..... उसके जीवन की रक्षा तुम करलो

बेटी तो भोलेनाथ की रहमत .... उसपे इतना सितम तुम ना करो

बेटी तो भोलेनाथ की रहमत .... उसपे इतना सितम तुम ना करो ।

(बेटी का भ्रुण) मां मां मां .... अभी तो भगवान ने मेरे हाथों में लकीरें भी नहीं बनाई पर तुम ने मेरी तकदीर का फैसला सुना दिया मां मुझे यही रहने दो आपकी की कसम मैं आपको कभी तंग नहीं करुगीं जब खाना खा कर हाथ धुलाई कर रहे होगीं तब मैं रसोई में जाकर सारे बर्तन साफ कर दिया करूगीं। मां मेरी पढ़ाई की चिंता मत करना मैं भैया की किताबों से पढ़ लूंगी मैं आप ही पढ़ जाऊगीं और हां पापा से कहना मेरे दहेज की चिंता ना करे। मैं आपके साथ रहकर बुढ़ापे का सहारा बनुँगी अगर फिर भी आपको लगता है कि मैं आप पर बोझ बनूँगी तो आप एबॉरशन पर खर्चा मत करना .. मैं ही भगवान को बोल दूंगी .... मेरी मां मेरा मरा हुआ मुँह देखे।

मां – नहीं मेरी बच्ची नहीं ऐसा मत बोल रोहित- रोहित (आवाज लगाती है) रोती है रोहित प्लीज मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं ऐसा नहीं होने दूंगी, मैं मर जाऊगीं पर इस बच्ची को नहीं मरने दूंगी.

रोहित- मरती है तो मर जा मैं बच्ची को नहीं होने दूंगा।

बेटी भ्रुण – मां मेरा दम घुट रहा है मुझे बाहर निकालो।

मां – पगली बाहर आ कर क्या करेगी तू ये दूनिया तेरे लायक नहीं है।

बेटी- मां मै आप को देखना चाहती हूँ पापा को देखना चाहती हूँ, भगवान की बनाई इस खूबसुरत दूनिया को देखना चाहती हूँ।

मां – अब ये दुनिया खूबसुरत नहीं रही यहां तू किसके साथ खेलेगी क्योंकि यहाँ हजारों लड़कियां पेट मे ही मार दी जाती हैं। ओर जो बच जाती हैं वो भी आजाद कहां है। बाहर आओगी तो मेरी तरह धक्के खाओगी मेरी बच्ची (रोती है)

बेटी – पर मां अन्दर मुझे डर लग रहा है।

मां – बाहर इससे भी ज्यादा डरावना है। ऐसे डर में जीने से तो अच्छा है तू बाहर मत आ मेरी बच्ची, तू बाहर मत आ, मत आ बाहर

(गीत बजता है)

अंगना में ऐसे खिले ..... धुप की चिड़िया
अखियों में ऐसा ..... खेले रुप तेरा गुड़िया
साथी ना संगी कोई सखी ना सहेली .... किन संग खेलेगी तू लाडो अकेली .. बंद है किवडिया .. . खिड़की पे सांकल ..... बाहर आकर क्या करेगी पागल
हो हो ना ऐसे देश मेरी लाडो ... ना आना ऐसे देश मेरी लाडो
हों चाहे दिल के टुकड़े हजार .. . ना आना ऐसे देश मेरी लाडो
(रोती है बार- बार होंश खो बैठती है)

पति – क्या हुआ ज्योति बोलो, कुछ तो बोलो- क्या हुआ आंखे खोलो कुछ तो बोलो ज्योति कुछ तो बोलो।

डॉक्टर- सॉरी मिस्टर रोहित she is dead

रोहित- नहीं ज्योति तुम ऐसा नहीं कर सकती नहीं – नहीं तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकती अरे मुझे बेटा नहीं चाहिए मुझे तू ही चाहिए अरे तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकती ज्योति .. (रोता है बार बार)
हे भगवान ये तुने मुझे इतनी बड़ी सजा क्यों दे दी अरे मुझे बेटा नहीं देना था तो नहीं देता मेरी ज्योति को क्यों छिन लिया .....

रोहित- आप कौन?
मैं बेटी हूँ ..... बेटी हूँ ....बेटी हूँ ....बेटी हूँ ....
बेटी हां बेटी मैं ही लक्ष्मी हूँ, मैं ही सरस्वती हूँ, मैं ही दूर्गा हूँ, मैं ही काली मैं ही शीतला हूँ, मैं ही ज्वाला भी हूँ, मैं ही पार्वती, मैं ही संतोषी हूँ और मैं ही अन्न पूर्णा हूँ।

आप सब – हां गौरव है हमें विधाता पर जो बेटी को बनाया
मैं लक्ष्मी बन कर तुम्हे धन दूं, सरस्वती बन कर तुम्हे ज्ञान दूँ, मैं पार्वती बन कर तुम्हे स्वाभिमान दूँ, दूर्गा बनकर तुम्हे शक्ति दूँ, काली बन कर तुम्हारे दुखों का नाश करुं, शीतला बन कर तुम्हारे जीवन में शांति लाऊ, ज्वाला बन कर तुम्हारे जीवन में रोशनी लाऊ और अन्नपूर्णा बन कर तुम्हारे जीवन को खुशहाल बनाऊ।
और तुमनें हमारी जिन्दगी को कोख में ही खत्म कर दिया। हमार कसूर क्या था? अरे हम तो तुम्हे कुछ देने ही आये थे क्योंकि तुम हमारे मंदीरों में आते हो , झोली फैलाते हो और तुम ही कोख में हमारी कब्र बनाते हो। तुम लोगों को मन्दिरों में आने का कोई हक नहीं जो मंदिर में आकर चुनरी चढ़ाते हैं ओर कोख में ही हमारी बलि चढ़ाते हैं। तुम जैसे लोगों के घर अब कभी नहीं आयेगें-कभी नहीं आयेगें कभी भी तुम जैसे लोगों पर खुशियां नहीं बरसायेंगे।

रोहित – मुझे माफ कर दो ,मैं डर गया था आजकल के हालात देख डर गया था।
बेटी- हालात का दोष मत दो मूर्ख ये हालात भी तुम जैसी गंदी सोच वाले लोगों ने ही बनाये हैं। अगर इतना ही डर था तो अपनी मां को क्यों नहीं मारा , अपनी बहन को क्यों नहीं मारा, अपनी बीवी को क्यों नहीं मारा हमें ही क्यों मारा? डर तुम्हे लग रहा था तो तुम मरते हमें क्यों मारा?

रोहित – बेटे के मोह में। क्योंकि बेटा वंश चलाता है
बेटी- अरे मूर्ख बेटा अगर वंश है तो बेटियां अंश है,अगर बेटा आन है तो बेटी गुमान है,अगर बेटा दवा है तो बेटी दुआ है, अगर बेटा गीत है तो बेटी संगीत है, अगर बेटा भाग्य है तो बेटी भाग्य विधाता है। अरे यहां सबको मां

चाहिए, बहन चाहिए,बीवी चाहिए लकिन बेटी क्यों नहीं चाहिए। जबकि ओस की बूंद होती हैं बेटियां, मां-बाप को जरा भी दर्द होता है तो रोती हैं बेटियां, रोशन करता है बेटा सिर्फ एक ही कुल को दो-दो कुलों की लाज रखती हैं बेटियां क्यों नहीं चाहिए बेटियां .. . है इस सवाल का जवाब कि क्यों नहीं चाहिए बेटियां, क्यों नहीं चाहिए।

क्या कसूर हमारा,(रोती है) क्या कसूर हमारा .....

रोहित – बेटी रो नहीं मुझे माफ कर दो मेरी बच्ची,मुझे माफ कर दो तुम्हारी कोई गल्ती नहीं है, कोई गल्ती नहीं है।

ज्योति- रोहित –रोहित उठो रोहित, रोहित उठो नींद में क्यों बोल रहे हो।

रोहित – अरे तुम जिन्दा हो?

ज्योति - जिन्दा .. हां मुझे क्या हुआ है?

रोहित- हे भगवान तेरा लाख-लाख शुक्र है? तुम सचमुच जिन्दा हो।

ज्योति – अरे हां पर हुआ क्या है?

राहित- पल्लवी

ज्योति – वो कौन?

रोहित- मेरी बेटी-मेरी बच्ची।

ज्योति- पर तुम्हे तो बेटा चाहिए था ना

रोहित- नहीं ज्योति नहीं अब मैं समझ गया हूँ बेटा-बेटी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिसके बगैर इस जिन्दगी की गाड़ी नहीं चल सकती है। अगर हमें अपने भविष्य को उज्जवल बनाना है तो पहले बेटी को बचाना है। बेटा-बेटी को बराबर का दर्जा देकर इस जिंदगी को खुशहाल बनाना है।

ज्योति- हां रोहित तुम बिल्कुल ठिक कह रहे हो बेटियां तो मां-बाप की रानियां होती हैं मीठी-मीठी, प्यारी-प्यारी कहानियां होती हैं। हमें इन्हें इस दूनिया में लाना ही होगा, इस दूनिया को बचाना है तो हमें इन्हे बचाना ही होगा। हम सब को मिलकर इन्हें बचाना ही होगा .... है ना रोहित

रोहित- हां तुम ठिक कह रही हो ज्योति इसकी शुरुआत हमें ही करनी है फिर सब लोग भी हमारा साथ देगें।

गीत बजता है-

ये लड़कियां तो मांओं की रानियां हैं

मीठी-मीठी प्यारी-प्यारी कहानियां हैं

इन का राम है रखवाला- इनका बचपन भोला-भाला

भोली-भोली सी इनकी जवानियां हैं- सबके दिल की सारे घर की ये रानियां हैं।

ये चिड़ियां एक दिन फुर से उड़ जानियां हैं।

कोई इनका हाथ ना छोड़े दिल ना तोड़े- ये सच्चे रब दी मेहरबानियां हैं

ये बेटियां तो बाबूल की रानियां हैं- मीठी-मीठी प्यारी-प्यारी कहानियां हैं

अंकल मैं आप सब को अच्छी लगती हूँ ना प्लीज हमें मत मारिये मत मारिये प्लीज।

:- ओम शांति -: